International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पुनर्जागरण और महिला चित्रकार

डॉ. अर्चना जोशी
व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, राजस्थान

सारांश

पुनर्जागरण की महान महिला चित्रकार पुरुषों की तरह व्यापक रूप से नहीं जानी जाती और सामान्यतः पुनर्जागरण कालीन चित्रकारों के मध्य महिला चित्रकारों की चर्चा नगण्य ही रहती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इतालवी पुनर्जागरण जो लगभग 14वीं से 17वीं शताब्दी तक फैला था, वह समय था जब महिलाओं का कला के क्षेत्र में स्वागत नहीं किया जाता था और उनके कार्यों को काफी हद तक समर्थन नहीं मिल पाता था। इसके बावजूद कई महिलाओ ने अपने लिए रास्ते बनाए, कला विकास में स्थाई योगदान दिया प्रस्तुत लेख उससमय की सामाजिक व्यवस्था उसमें क्रमशः आ रहे बदलाव मे नारी कलाकार की कला जगत की मुख्य धारा मे ं प्रतिष्ठिता की यात्रा को इंगित करता है। मुख्य शब्द– पुनर्जागरण, महिला चित्रकार, परिश्रम, कला यात्रा।

14वीं शताब्दी के आसपास उत्तरी इटली में भूमि का महत्त्व धीरे–धीरे कम होने लगा। आर्थिक स्थिति ने करवट ली और सम्पत्ति का मूल्यांकन धन से होने लगा। लोग जागीरदारी घरो ं को छोड़कर अपने भाग्य को आजमाने नगर में चले गए। अधिकार का यह अभिज्ञान ही पुनर्जागरण कहा गया और 16वीं सदी के आते–आते यह सम्पूर्ण यूरोप में पूर्ण रूप से छा गया था। पुनर्जागरण ने कला के केन्द्र को धर्म के स्थान पर पारम्परिक रोमन और ग्रीक शैली के सम्मान में बदल दिया। इसअवधि में यहाँ कला पल्लवित हुई क्योंकि यहाँ अवसर पर्वू की अपेक्षा अधिक अच्छे थे।

यह मध्यकालीन इतिहास में पहला अवसर था जबकी अनेक महिला कलाकारों ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति व प्रतिष्ठा प्राप्त की। महिला कलाकारों की सख्ंया में यह परिवर्तन विशाल सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण हुआ। यह परिवर्तन मानवतावाद की ओर था। व्यक्ति की प्रवृत्ति व उसकी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत एक एसे दर्शन जिसने नारी के प्रति सोच को बदलने में मदद की और मध्ययुगीन प्रचलित स्त्रीत्व की तुलना में नये दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व किया। इससमय की मुख्य विशेषता यह रही की अधिकांश महिला चित्रकार, चित्रकार पिता की सन्तान थीं जो अपने पिता से प्रशिक्षण लेकर पारंगत हुई। परन्तु तथ्य यह है कि पुनर्जागरणकालीन महिलाओं की स्थिति में यह अन्तर इतना आसानी से नहीं आया। इसप्रतिष्ठा की स्थिति तक आने के लिए उन्हें पर्याप्त लम्बा मार्ग तय करना पड़ा। इसलिए कुछ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इतिहासकारो ंके अनुसार महिलाएँ पुनर्जागरण के किसी लाभ का वास्तविक अनुभव नहीं कर सकी अपितु इसने उनके जीवन को अधिक कठिन बना दिया।

मध्यकाल के दौरान महिलाओ का प्रारम्भिक पालन–पोषण पुनर्जागरण से कुछ भिन्न था, परन्तु फिर भी बहुत कुछ समानताएँ हैं। मध्यकाल में लड़कियों की सगाई उनके जन्म के तुरन्त बाद कर दी जाती थी और तेरह या चौदह वर्ष की आयु में लड़कियो ंकी शिक्षा पर्णू हो जाती थी।

शिक्षा व प्रशिक्षण पूर्णतया उसके द्वारा पत्नि के निर्धारित अभिनय और घर–परिवार की पालना करने के लिए वांछित कुशलता तक केन्द्रित था। महिलाओं का यह पारम्परिक पालन–पोषण प्रारम्भिक पुनर्जागरण में नाटकीय ढंग से नहीं बदले, केवल मात्र उनका विवाह दो या तीन वर्ष के लिए टाल दिया गया। अतः सामान्यतः उनका विवाह 15 या 16 वर्ष की आयु मे ंहोने लगा।

पुनर्जागरण काल मे ंसम्पूर्ण यूरोप के ग्रामीण क्षेत्र के खेतीहर और निम्न श्रेणी मे ंपारिवारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी थी। वे अपने पतियों की प्रतिरूप मानी जाती थी और वे अपने पति के साथ कार्य करती थी। खेतीहर महिलाएँ उसी प्रकार से विभिन्न प्रकार के कार्य करती रही जैसे वे जागीरदारी घरो ंमें करती आ रही थी। इनमें कृषि कार्य, फार्म पशुओं की देखभाल एवं डेयरी उत्पादन सम्मिलित हैं। जब महिलाएँ यह कार्य वेतन के लिए करती थी तो वे पुरुषो ंको प्राप्त राशि की केवल आधी ही अर्जित करती थी चूँकि निम्न श्रेणी की महिलाएँ लिख और पढ़ नहीं सकती थीं उन्होनें अपने कार्य, खुशी और दुःख के बारे मे ंकोई पत्र अभिलेख नहीं छोड़ा। इसलिए आज बहुत कम अभिलेख उपलब्ध हैं जो खेतीहर और निम्न श्रेणी के लोगों के जीवन के बारे में विवरण दे। परन्तु उच्च कुल की धनवान महिलाओं के लिए कानवेन्ट का अकेलापन एक अन्य विकल्प था। एक पत्नी से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने पति की सहयोगिनी बने, परन्तु वह हमेशा उसकी अधीनस्थ रही और पति द्वारा सर्वदा उससे आज्ञापालन की अपेक्षा की जाती रही। इस अवधि में महिलाओं के लिए प्रत्येक निर्देश और लेख में उसके पतिव्रता होने पर जोर दिया गया। युवा महिलाओ का उनके परिवार एव ंसम्बन्धियों द्वारा उनके कौमार्य को सुरक्षित करने के लिए गहन देखभाल की जाती थी और तलाक प्राप्त करना व्यावहारिक रूप से बिल्कुल ही असम्भव था। इस समय महिलाओं को विधिक अधिकार बहुत ही सीमित थे। लोकपदों के धारण और विधिक न्यायालयों में भाग लेने से भी उन्हें अलग रखा गया। अधिकांश मामलो ंमें पति ही समस्त निर्णय लेते थे और मामलों का निपटारा करते थे। पतियों को यह भी अधिकार था कि वे जब इच्छा हो अपनी पत्नी को पीट सकते थे। उस समय फ्लोरेंसमे ंमहिला संतान गोद नहीं ले सकती, किसी मनुष्य की जमानत नहीं दे सकती, अपनी स्वय ंकी संतानों के अतिरिक्त किसी अवयस्क मनुष्य की अभिभावक या प्रतिनिधि नहीं बन सकती थी। महिलाओं के लिए लिखित पुनर्जागरण लेखो ंऔर पुस्तको ंमें बारम्बार पुनर्जागरणकालीन महिला के आदर्श गुण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उद्धृत किए गए हैं जैसे शान्त, सुशील, शिष्ट और पति के लिए प्यार। ये अपक्षो की जाती थी कि महिलाएँ अपने आक्रामक चरित्र को दबाए और अधिक विनीत प्रकृति व्यवहार में लाए। लडक़ों को पढ़ाए जाने वाले विषयों से लड़कियों को अलग रखा जाता था। लड़कियों को केवल यही शिक्षा दी जाती थी कि वे अच्छी सक्षम गृहस्थिनी बने और गृह परिवार सुव्यवस्थित कैसे रखें। इसलिए जिन पुस्तको ंको पढ़ने के लिए महिलाओं को जो निर्देश दिए जाते थे इनमें कल्पत कथा नहीं होती थी जो उसकी इच्छाओ ंको उत्तेजित कर सकती। वह केवल सदाचार और धार्मिक पुस्तकें ही पढ़ सकती थी। लेकिन कई भौतिकशास्त्र, कृषि और चिकित्सा की पुस्तके ंभी पढ़ती थी। उसकी शिक्षा का उद्देश्य था पर्णू एकलता को दबाना, उसकी हर सुविधा के लिए पति की इच्छा पर पर्णूतया निर्भर रहना और घर की चार–दीवारी मे ंरहने को स्वीकार करना। उसके प्रशिक्षण मे ंएसो कुछ करने की इजाजत नहीं थी जिससे वह उत्साहित हो या वह प्रतियोगिता करने की योग्यता प्राप्त कर सके।

इसलिए कैली गेडोल (एक इतिहासकार) के अनुसार महिलाओं ने पुनर्जागरण का वास्तव में आनन्द नहीं उठाया। उन्होनें पुनर्जागरण का अनुभव नहीं किया, इसके विपरीत यह पात्र पर्वूकाल की अपेक्षा अधिक परवश रहा। डॅविड हरली (एक मुख्य यूरोपीय इतिहासकार) इसमामले में एक अन्य विचार प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार कि पुनर्जागरण में कुछ बदला तो वह था कुछ महिलाओं में स्वयं को जानने की इच्छा। फिर भी सामाजिक दशा में कोई सुधार नहीं हुआ, परन्तु महिलाओं मे ंअपने प्रति चेतना बढ़ी। उन्होंने स्वच्छ मान्यता, योग्य व्यक्तित्व विकसित करना आरम्भ किया। यह पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान मानवतावादियों का व्यक्तिवाद पर जोर देने के कारण सम्भव हुआ। महिलाओं के लिए शिक्षा के प्रारम्भिक स्वरूप को चुनौती दी गई। इस नए विचार ने तुरन्त ही इटली पर अपना प्रभाव जमाना आरम्भ किया जिससे लड़कियों के विद्यालय स्थापित होने लगे। मानवतावादियों के अनुसार महिलाओं को वही शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए थी जो पुरुषों को प्राप्त होती है, प्रतिरूप मानवतावादियों ने माँग की कि उच्च कुल की महिलाओं को चर्च साहित्य को पढ़ने के लिए लेटिन भाषा की जानकारी होनी चाहिए। शनैः शनैः उन्होनें अन्य विषयों का भी अध्ययन किया जैसे ज्योतिष विज्ञान, रेखागणित और अंकगणित। कुछ महिलाओं ने एकल व्यक्तित्व का विकास करना आरम्भ किया कुछ ने कवि और लेखक के रूप में प्रतिष्ठा पाई और यही पेंटर्स के साथ हुआ, बहुतों ने क्राफ्ट अपने अति दयालु पिताओ ंसे सीखे और पिताओं ने अपनी पुत्रियों के बौद्धिक विकासको प्रोत्साहित करना आरम्भ किया।

अतः उसकाल की अभिलिखित महिला कलाकारो ंमें से अधिकांश या तो कलाकारो ंकी पुत्रियाँ थीं जो अपने पिताओ ंकी कार्यशालाओ ंमे ंप्रशिक्षित हुई अथवा कुलीनों की पुत्रियाँ थीं। इसलिए सामान्य महिलाएँ कलाक्षेत्र में कुशलता की शिक्षा लेने हेतु सामने नहीं आई, क्योंकि पुनर्जागरण काल में घरेलू

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कार्य बहुत ही कठिन और समयग्राह्य था और यह अधिकांश महिलाओं को घर से बाहर जीवन वृत्ति के लिए सोचने का अवसर ही नहीं देता था। वास्तव मे ंबहुत–सी योग्य महिला कलाकारो ंने बहुत कम चित्र बनाए या विवाहोपरान्त अपने कलाकार जीवन वृत्ति की पर्णूतया इति कर दी।

महिलाओं को कलाकार बनने में इसलिये भी अधिक कठिनाई आई क्योंकि कलाकारो ंसे अपेक्षा की जाती थी कि वे विज्ञान, गणित, चित्र बनाने की कला में शिक्षा लें और प्रायोगिक कुशलता प्राप्त करे। वे नग्न प्रतिमाओ ंके अध्ययन की शिक्षा ले। दुर्भाग्यवश नग्न प्रतिमा के अध्ययन से महिला कलाकारो ंको अलग रखा गया। 1893 के अन्त तक लाइफ ड्राइगं में रॉयल अकादमी ऑफ लंदन मे ंमहिला विद्यार्थियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था और यहाँ तक कि जब उन्हें प्रवेश दिया गया उस तिथि के बाद तो मॉडल को अंशतः ढक दिया जाता था जिसे महिला कलाकारों द्वारा निर्मित पुनर्जागरण की कलाकृतियों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। अधिकांश चित्र घरेलू वातावरण में है जैसे व्यक्तिचित्र, गृह व्यवस्था से सम्बन्धित चित्र व वस्तु चित्रण। यह दर्शाता है कि महिलाएँ अधिकतर अपने घर तक ही सीमित रह गई हैं, उन्हें अपने लिए बहुत कम स्वतन्त्रता थी। यह उनके कलाकार बनने के लिए बहुत कठिनाई पैदा करता था क्योंकि कलाकार बनने के लिए मुख्य कला केन्द्रो ंकी बहुत अधिक स्वतन्त्र यात्राएँ और उसकाल के प्रसिद्ध कलाकारो ंकी उपलब्धियो ंका अध्ययन सम्मिलित होता है। उससमय एक महिला के लिए स्वतन्त्र रूप से यात्रा करना अनुचित समझा जाता था। उन मामलों में जहाँ कमीशन के लिए कलाकारो ंसे इकरारनामा का प्रबन्ध किया जाता था, वहाँ भी महिला कलाकारो ंकी स्वतन्त्रता में अवरोध था। बहुधा एसे समय पर पारिवारिक पुरुष सदस्य, सतं या पुजारी महिलाओं की ओर से इकरारनामा करते थे।

खेतीहर महिलाओं की भागीदारी मे ंबहुत कम परिवर्तन हुआ। वे उसी प्रकार जमींदार के घर से जुड़ी रही और बुनियादी तौर पर वही घरेलू और कृषि कार्य करती रही जो पुनर्जागरण से पूर्व करती थी। उन्हें पर्णूतया एकमात्र पत्नी एव ंमाता का पात्र निभाने के लिये सीमित कर दिया गया। जिन्होनें कान्वेन्ट में प्रवेश ले लिया उन अपवादों को छोडक़र कुलीन महिलाओं की शिक्षा आकस्मिक ही धर्म और कुशलता तक सीमित हो गई जिससे कि वे अच्छी गृहिणी बन सके।

कार्यरत श्रेणी की महिलाओं के व्यावसायिक कार्य–कलापों को भी पुनर्जागरण के दौरान अधिक सीमित कर दिया गया। अधिकांशतः समस्त व्यापार गिल्ड्सके द्वारा नियन्त्रित थे और बहुतों ने महिलाओं को इनसे अलग रखना आरम्भ कर दिया था। व्यापारिक महिलाओं को प्रचुर मात्रा में व्यापार से हटा दिया गया और जो हट नहीं सकीं, वे इनकी भाँति अब अपने व्यापार को स्वतन्त्रता से नहीं चला सकी। महिलाओं की उन्नति में बाधा डालने से प्रशिक्षु स्थिति दुर्लभ हो गई। कार्यरत महिलाएँ जो पारस्परिक स्वतन्त्रता का उपभोग विवाह से पूर्व कर रही थी, वे विवाह पश्चात् न कर सकी। विवाहित महिलाएँ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

घर पर ही रहने लगी थी। इससे कोई फर्क नहीं पडता कि वे किस श्रेणी से सम्बन्धित थीं। व्यावसायिक गतिविधियो ंपर इन अवरोधो ंके कारण महिलाएँ कलाकृतियाँ बनाना चाहती थीं, परन्तु वे बखेड़ा खड़ा नहीं करना चाहती थी, अतः उनके लिए प्रतिलिपि सृजन एक बहुत ही आकर्षक विकल्प बन गया।

ऊँची इच्छा रखने वाली महिला कलाकारो ंपर जो अवरोध रखे गए वे बहुत अधिक थे। यह आश्चर्यजनक नहीं था कि बहुत कम महिलाएँ जो इन अवरोधों को पार करने के योग्य थीं और चित्रण व शिल्पकला में सफल हुई, वे कलाकारो ंकी पुत्रियाँ थीं। सबिना वोन स्टेनवेक प्रथम ज्ञात महिला शिल्पकार ऐसे ही पालन–पोषण से लाभान्वित थी। उसके पिता एक शिल्पकार थे जिन्होनें उसे बहुत ही छोटी आयु मे ंशिल्प की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। उसे जर्मनी में कचेडूल ऑफ स्ट्रासबर्ग के शिल्प के लिए कमीशन दिया गया। 1318 में परियोजना परूी होने से पर्वू ही उसकी मृत्यु हो गई।

समष्टि रूप में पुनर्जागरण कालीन यूरोप मे ंलोक कला का जो धमाका हुआ उसमें अधिकांश महिला कलाकारों पर जो लांछन लगा था उससे उभरने के लिए उन्होनें सघंर्ष किया। 17वीं शताब्दी कला जगत् में अन्य बदलाव लाई। यह दृश्य कला के लिए सक्रंमण काल था। अब लक्ष्य आदर्श सुन्दरता बनाने का नहीं बल्कि विश्व का वास्तविक दृश्य बनाने का रहा। रोरोको कला ने यथार्थ जीवन प्रकट किया, शारीरिक और अप्रिय तत्त्व दोनों को अखण्ड रखा। धार्मिक और पौराणिक विषय–वस्तु सामान्यतः छाया और प्रकाश में गहन अन्तर के लक्षण दर्शाती थी और कलाकृतियां फर्ज पर जोर देती थी न कि रुकावट पर। व्यक्ति–चित्र एवं वस्तु चित्रण भी इसकाल के दौरान लोकप्रिय थे।

वस्तुतः अगर महिला कलाकार द्वारा पुनर्जागरण हुआ तो यह अवश्य ही 15वीं सदी के स्थान पर 16वीं और 17वीं सदी में हुआ। पुनर्जागरण युग में इटेलियन नगर राज्य में से बोलोग्ना बजोड़ था। उसने मध्ययुग से अपने विश्वविद्यालयों में महिलाओं को प्रवेश देकर न केवल सभी महिलाओं को बहुत से अवसर प्रदान किए, बल्कि अपनी महिला कलाकारो ंके लिए विशेष रूप से सहयोग दिया। यहाँ की कलाकार सतं सरं क्षक महिला कलाकारों में से एक महिला कलाकार बोलोग्ना की संत केथरीन थी। पुनर्जागरण अवधि में बोलोग्ना द्वारा गुणी चित्रकारों की झड़ी लगा दी गई थी। केटरीना के साथ बोलोग्ना ने उस समय प्रोपरजिया डे रोजी, लविनिया फोन्टाना और एलिसबट्टो सिरानी जैसे तीन बहुत गुणी महिला कलाकार दिए।

वैसे सम्पूर्ण इटली में प्रगतिशील बेलोग्ना में भी महिलाओं को कला के क्षेत्र में आने से रोकने हेतु कई षड्यन्त्र रचे जा रहे थे। करीब–करीब सभी व्यवसायों में मण्डलियाँ विकसित हो गई थीं। अधिकांशतः इनमें महिलाओं को सदस्यता से अलग रखा गया। सांस्कृतिक रोक ने महिलाओं को कला के प्रशिक्षण हेतु पहुँच को सीमित कर दिया था। विशेषतः नग्न पुरुष का अध्ययन जो उस समय के प्रचलित

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाइबिल आधारित एवं ऐतिहासिक कला कार्य के लिये कठिन था। इन अध्ययनो ंके बिना महिलाओं के लिए कोई रास्ता नहीं था कि वे समाज में सम्मानजनक और लाभदायक स्थान प्राप्त करने हेतु आवश्यक कुशलता प्राप्त कर सके। वास्तव में अधिकांश महिला कलाकारो ंको कला में किसी प्रकार के निर्देश प्राप्त करने के कोई अवसर नहीं थे। पुरुष भ्रमण करने एवं बढ़िया शिक्षक ढूँढ़ने के लिए स्वतन्त्र थे, परन्तु कुछ अपवादों जैसे अंग्यूशोला बहनों को छोडक़र महिलाएँ यह सुख–सुविधा नहीं जुटा सकती थी। एसी परिस्थितियो ंमें अधिकांश महिलाएँ जिन्होनें कोई कलात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया वे या तो स्थापित कलाकारो ंकी पुत्रियाँ थीं अथवा ऐसे धनाढ्य परिवारो ंसे थी जो निजी शिक्षक किराये पर रख सकते थे। अधिकांश महिला कलाकार स्थापित कलाकारो ंकी पुत्रियाँ थीं। एसी महिलाओं को उनके समकालीन धनाढ्यों के विपरीत यह लाभ था कि उनके पिता की कार्यशाला में वे अधिकांश रूप से अध्ययन की पहुँच मे ंथी। जैसे पुरुष शरीर का अध्ययन जो कि सामान्यतः महिलाओं के लिए खुला नहीं था। अट्टेमिशिया, जेन्टीलेस्वी मानव शरीर को प्रदर्शित करने वाले कार्य की रचना करने मे ंबहुत ही कुशल थी।

एक सफल कलाकार बनने के लिए आवश्यक कुशलता एक बार प्राप्त कर लेने पर भी महिलाओं को अपने व्यवसाय के लिए कई बाधाओ ंका सामना करना पड़ा। महिलाओं से अब भी यह अपेक्षा की जाती थी कि वे विवाह करें और घर पर रहकर बच्चो ंका पालन करे। परिवार एव ंगृह कार्य चलाने के कारण कलात्मक प्रयत्नो ंके लिए बहुत ही कम समय बच पाता। इस तथ्य के कारण अधिकांश महिला कलाकारो ंने या तो विवाह ही नहीं किया अथवा जैटिलरेन्ची की तरह उनका विवाह असफल रहा। परन्तु कुछ नगण्य अपवाद भी थे जैसे सोफोनिशबा और लबीनिया फोन्टाना सफल विवाहिताएँ रहीं और इनके पति भी व्यवसाय में सहयोगी रहे।

हांलाकि इस दौरान आये बदलाव ने महिलाओं के लिए कला का प्रशिक्षण और पहुँच के और अवसर प्रदान किए और कला क्षेत्र के दरवाजे खोल दिए। हॉलैंड और बैल्जियम जैसे देशो ंमें महिलाओं के कार्य–कलापों पर लगे अवरोध कम होने लगे और महिलाओं ने इसका लाभ उठाया। उच्च श्रेणी की चित्रकार जुडिश लेयसंट और रेयेल राउस्च अपनी कलाकृतियों को उस मूल्य पर बचे ने में समर्थ हो गई जो महिलाओं के लिये अप्राप्य थी। सामाजिक परिस्थितियाँ महिलाओं के लिए उज्ज्वल होने लगीं थीं। वे पश्चिमी यूरोप के आर–पार चित्रकार और शिल्पकार के रूप में बहुत अधिक क्रियाशील होने लगी। इन महिलाओं के लिए यह आसान नहीं था। परन्तु धीरे–धीरे वे अपनी योग्यतानुसार साम्मान प्राप्त करने लगी।

इसकाल के दौरान परूे राज्य में दो अलग–अलग शैलियाँ सामने आईं जो एक–दूसरे के बिल्कुल विपरीत रही। बरोक काल का प्रतिनिधित्व करने वाली दो मुख्य शैली थी केरेवेगीस्क्यू शैली और

बोलोग्नीज शैली। केरेवेगीस्क्यू शैली का विकासमाइकल एजं लो मोरिर्स दा केरेबगियो ने किया। इसशैली की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें इकी डार्क बेक ग्राउण्ड मे ंछनी रोशनी द्वारा जगमगाहट का प्रभाव उत्पन्न किया जाता था।

द्वितीय मुख्य चित्रण पद्धति थी बोलोग्नीज शैली। इसे एनीबेले केरेसी ने विकसित किया। यह शैली मुख्यतः फेस्को पेंटिंग पर केन्द्रित थी। एलिसबेट्टा सिरानी एक जानी–मानी महिला चित्रकार थी जिसने इस समय की बोलोग्नी शैली का प्रतिनिधित्व किया।

यद्यपि 15वीं शताब्दी से पर्वू बहुत ही कम कलाकृतियाँ हस्ताक्षरित थीं और उनमें कार्यरत कलाकारो,ं पुरुष या स्त्री की कोई सूचना उपलब्ध नहीं है फिर भी पुनर्जागरण के आरम्भिक काल मे ंकलाकारो ंके परिचय और उनकी कृतियों को सुरक्षित रखा जाना आरम्भ किया गया। यहाँ उस समय की कुछ महिला कलाकारो,ं उनकी कृतियाँ व जीवनियो ंका उल्लेख प्रासंगिक है।

गियोवाना गारजानीः

16वीं सदी की वस्तु चित्रण करने वाली महिला चित्रकारो ंमें से एक थी। उसने व्यक्ति–चित्र और धार्मिक चित्र भी बनाए, परन्तु वह मुख्य रूप से वाटर कलर से पड़े–पौधे एवं पशुओं के चित्र बनाने के लिये स्मरणीय है। उसके स्टिल लाइफ चित्रों में ’प्लेट ऑफ वाइट बीन्स’ एक विशिष्ट उदाहरण है। ’प्लेट ऑफ वाइट बीन्स’ एक सामान्य कलाकृ ति थी परन्तु गारजोनी ने उसमें क्षतिग्रस्त पत्तियाँ, पकी हुई समे की फली के विस्तृत चित्रण पर जोर दिया और जिसछिछले कटोरे में उन्हें प्रदर्शित किया उसके किनारे को जिसतरह से अनियमित ढंग से रंगा वह उसकी चित्रण कुशलता को दर्शाती है।

मारिया सिबैला मेरियनः

मारिया सिबैया मेरियन एक अन्य वस्तु चित्रण (स्टिल लाइफ) महिला चित्रकार थी। उसके सौतेले पिता, जेकब मॉरिल एक फ्लेमिश फ्लावर चित्रकार थे जिन्होनें उसको कलात्मक शिक्षा में सहायता की। उसकी कलाकृतियाँ वैज्ञानिक रूप पर जोर देती हैं तथा अपने पिता के प्रभाव को दर्शाती है। उसने प्राकृतिक जगत् के सम्बन्ध में अपने स्वयं के मूल निरीक्षण के माध्यम से कला और विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। मेटाफोरसिसइन्सपेक्ट्रम सुरीनेमन्सियम 1705 में प्रकाशित हुई। इसग्रन्थ में उसके जलरंग कलाकृतियों का प्रभावशाली सकं लन है।

लोइसा मोयलोनः

लोइसा मोयलोन 17वीं शताब्दी मे ंफ्रांस की महान् वस्तु चित्रण चित्रकार थी। उसके पिता निकोल समोयलेन पारिसैयन चित्रकार और कला व्यवसायी थे। चूँकि जब वह नौ वर्ष की थी तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई। उसके सौतेले पिता, फ्रेन्कोइसगाटनियर जो स्वयं चित्रकार और कला व्यवसायी थे,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उसकी कला की शिक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वह 10 वर्ष की आयु में ही अपनी कलाकृतियाँ बेचने लगीं। 1630 तक वह सफल चित्रकार बन चुकी थी। उसकी अधिकांश कलाकृतियाँ फलों के वस्तुचित्रण मे ंअधिक विशिष्टता रखती थी।

क्लारा पीटर्सः

महान् वस्तु चित्रण कलाकार क्लारा पीटर्स एक फ्लेमिश चित्रकार थी। विद्वान उसके जीवन के बारे में बहुत कम जानते हैं, परन्तु यह अवश्य जानते हैं कि उसने कला में सर्वोत्तम प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उसके हस्ताक्षर और दिनांक से पीटर्स की कलाकृतियो ंकी पहचान होती है। उसके आरम्भिक कार्यों के विशिष्ट उदाहरण में बहुत मात्रा में फूल, आरामतलब चीजो ंऔर महँगा खाना और पीने से सम्बन्धित चित्र सम्मिलित है। चित्रण मे ंबहुत तरह के प्रयोग करना पीटर्स के कृतियों की मुख्य विशेषता कही जा सकती है। मछलियों और शिकार दृश्यों का भी चित्रण किया। दूसरे वस्तु चित्रण के चित्रकारों की तरह, उसने सावधानीपूर्वक टेबल पर चीजों को सजाये हुए चित्रित किया। उसकी सर्वोत्तम कलाकृतियों में से एक 'स्टिल लाइफ विद फ्लोवर्स' और 'गोबलेट डाइट पफ्रेट' तथा 'प्रीजल्स' विशेष उल्लेखनीय है जो उसकी चित्रण तकनीक को दर्शाती है।

केथेरीना–डे विगरी' (1413–1463)

केरीना का जन्म बोलोग्ना सामन्त परिवार में 1413 में हुआ और उन्होंने कोर्ट ऑफ फरेरा में शिक्षा प्राप्त की। 1427 में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने क्लेयर्स की कावेन्ट में प्रवेश लिया। प्रसिद्ध चित्रकार के साथ–साथ केथरीना लेटिन मे ंपारंगत थी और सगीत व पाण्डुलिपि दीपसज्जा (इल्युमिनेशन) में भी कुशल थी। 1456 में पअू र क्लयेर्स के उसके गृह बोलोग्ना मे ंस्थानान्तरित होने पर उन्हें सन्यासिनी निर्वाचित किया गया। उनकी मृत्यु 1463 मे ंहुई और उनके शव को कोटपसडोमिनी चर्च मे ंरखा गया। कालान्तर में उसे संत का दर्जा मिला और वह बोलोग्ना के सरं क्षक संतो ंमे ंसे एक बन गई। उसके कार्यों के बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु एक संत का महत्त्व जो एक महिला चित्रकार थी और एक एसे नगर की जो महिलाओं के लिए उन्नतिशील रुझान के लिए प्रसिद्ध था, सरं क्षक सतं बनी, यह दर्शाता है कि वह अपने समय की एक प्रभावशाली महिला थी।

प्रोपरजिया डे रोजीः (1490–1530 बोलोग्ना)

प्रोपरजिया के जन्म के सम्बन्ध में विभिन्न सन्दर्भ मे ंदो विभिन्न तिथियाँ इंगित करते हैं। अधिकांश सन्दर्भ उसकी जन्म 1490/91 बताते हैं परन्तु कुछ 1450 ई. अंकित करते हैं। यह भिन्नता विशेष रूप से रोचक है क्योंकि सशक्त सन्दर्भ उसकी मृत्यु 1530 में बताते हैं। इसप्रकार से कुछ सन्दर्भयह बताते

हैं कि वह करीब 80 वर्ष की आयु तक जीवित रही जबकि दूसरों का कहना है कि वह 40 वर्ष की आयु तक ही जीवित रही।

प्रोपरजिया के पिता कलाकार ही नहीं बल्कि नोटेरी भी थे। पुनर्जागरण काल मे ंवे ही इटली की एकमात्र महिला सगं मरमर मूर्तिकार थी। उसने पीच स्टोन (आडू की गुठली) पर नक्काशी करना आरम्भ किया। 11 पीच स्टोन पर नक्काशी कर उन्हें चाँदी के तार पर स्थापित किया गया। नक्काशी और चित्रकारी के क्षेत्र में रैफेल के पश्चात् इनका ही नाम लिया जाता है। इनके सगं मरमर के क्षेत्र मे ंप्रसिद्ध कार्यों में दो उभरे हुए नक्काशी पैनल, जोसफे और पिटिफर की पत्नी एवं सेबा की महारानी की सोलोमन यात्रा है जिनके लिए उन्होनें बोलोग्ना में सेन पत्रे ानियो चर्च के लिए बहुत ही सम्मानजनक अधिकार पत्र जीता। जोसेफ और पिटीकर की पत्नी को उनका बहुत ही आकर्षक कार्य माना गया। इसके रचना निरूपण और मासं ल आकार प्रोपरजिया का पारम्परिक ग्रीक मूर्तिकला से गहन परिचय ही नहीं दर्शाती बल्कि मानव शरीर को चित्रित करने की कुशलता भी दर्शाता है। यह इसमान्यता की ओर अग्रसर करती है कि प्रोपरजिया की पहुँच मानव शरीर के अध्ययन तक थी, विशेषकर पुरुष शरीर का अध्ययन जो उससमय की महिलाओं के लिए बहुत ही विरल था।

इन महिला चित्रकारो ंके आगे अनेक नाम गिनवाए जा सकते हैं, जिन्होंने इससंघर्ष यात्रा को आगे बढ़ाया दृड संकल्प और प्रेरणा के साथ इन्होंने यूरोपीय इतिहासके सबसे महत्वपर्णू आंदोलन मे ंअपना अभूतपूर्व योगदान दिया सदियों के संघर्ष व परिश्रम के पश्चात क्रमशः सफल होते हुए यूरोपीय महिला चित्रकार विश्व स्तरीय सफल चित्रकारो ंमें अपना नाम सम्मान के साथ दर्ज करने लगीं

संदर्भः–

1. Slatkin, Wendy: Women Artists in History: From antiquity to the 20Th century, Prentice Hall, N. J., 1985

2. Pamela Gerrish Nunn: Pre-Raphaelite Women Artists, Thames and Hudson, London, 1998.

3. Parker, Rozsika: The Subversive Stitch: Embroidery and the Making of the Feminine, Routledge, New York, 1984.

4. Petteys, Chris: Dictionary of Women Artists: an international dictionary of women artists born before 1900, G.K. Hall, Boston, 1985

5. Pollock, Griselda: Vision and Difference: Femininity, Feminism and the Histories of Art, Routledge, London, 1988.

6. Raynar, M. -The History of Modern Painting: Zmemmer & Skra, London and Switzerland, 1949 and 1953.

7. Rosenthal, Angela: Angelica Kauffman: Art and Sensibility, London, and New Haven: Yale University Press, 2006.

8. Waller, Susan: Women Artists in the Modern Era: A Documentary History, Scarecrow Press Inc., London, 1991.

9. Elizabeth C. Baker: Art and sexual politics: Why have there been no Great Women Artists: Collier Books, New York, 1971